FEUDALISM(PART-1)

FOR:U.G.PART-1,PAPER-2

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

- यूरोप में मध्यकाल के दौरान जिस नई सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था का उदय हुआ वह सामंतवादी व्यवस्था के नाम से जाना जाता है।इसने लगभग 500 वर्षों(700-1200ई.) तक यूरोप के नागरिकों के राजनीतिक ,सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को गहरे रूप से प्रभावित किया।

सामंतवाद शब्द की उत्पत्ति

सामंतवाद(Feaudalism)शब्द **फ्यडम**(Feodum)अथवा '**फिफ**' या '**फी**'शब्द से निकला है।फ्यिडम, फिफ,या फी शब्द जर्मन भाषा के **वियह्**(Vieh)शब्दे से निकला हुआ है जिसका व्यापक रूप में अर्थ होता है **संपत्ति**(Chattel)।

- इस लिहाज से सामान्य शब्दों में सामंतवाद को संपत्ति के आधार पर स्थापित मध्ययुग कि वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक व्यवस्था कहा जा सकता है जिसके अंतर्गत मध्ययुगीन मानव को प्रमुखतः अपना जीवन यापन करना पड़ा है

सामंतवाद का अर्थ

सामंतवाद की सटीक परिभाषा देना कठिन है। एक तरफ इसमें **राजनीतिक- वैधता** (Political-legal)के तत्व शामिल थे तो दूसरी तरफ **सामाजिक -आर्थिक**(Socio-Economic) तत्व विद्यमान थे। यू सामंतवाद राजनीतिक तथा सामाजिक संगठन की रचना में योगदान करता रहा किंतु इसका मूल संबंध **भूमि** से था। इसके अतिरिक्त सामंतवाद की जन्मभूमि तथा विकास स्थल भी एक नहीं है। इसका प्रथम उद्भव **फ्रांस** में हुआ और वही व अपनी स्थिति की पराकाष्ठा पर पहुंच गया ।

सामंतवाद का अर्थ

पुनः जर्मनी इटली आदि देशों में इसका विकास हुआ और तत्पश्चात यूरोप के अन्य देशों में फैलता गया। यूरोप की तरह एशियाई देश भी इसके विकास स्थल रहे।

- प्रसिद्ध **भारतीय विचारक एम. एन. रॉय** ने सामंतवाद में तीन तत्वों का समावेश पाया है- राजनीतिक तत्व, सामाजिक तत्व तथा आर्थिक तत्व। उनके अनुसार 'सामंतवाद एक सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था थी जो मध्ययुगीन यूरोप में भूमि वितरण के आधार पर फली- फूली थी।'इनका कहना है सामंत ,सेना से राजा की सहायता

सामंतवाद का अर्थ

- करते थे (राजनीतिक)सामंत तंत्र ने समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया(सामाजिक) और समूची व्यवस्था भूमि (आर्थिक) पर आधारित थी।
- भारतीय इतिहासकार **श्रीराम शर्मा** की दृष्टि में सामंतवाद मात्र एक सामाजिक संगठन था। उनका कथन है कि- 'यूरोप का मध्यकालीन सामंतवाद एक सामाजिक संगठन था जो भूमि के स्वामित्व और उससे संबंधित सेवा की शर्तों पर आधारित था।'

सामंतवाद का अर्थ

- पश्चिमी विद्वान **विच (Weech)** ने श्री एम. एन. राय के विचार का कुछ संशोधन के साथ समर्थन किया है। उन्होंने सामंतवाद का मूलाधार भूमि को माना है भूमि के आधार होने से दो भावनाओं का जन्म हुआ, रक्षा करने की भावना तथा सेवा करने की भावना । भूमि के चलते समाज में शोषक शोषित वर्ग का भी जन्म हुआ। विच के अनुसार समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से सम्बद्ध था। उनका कहना है कि इस व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति अपने से निम्न वर्ग का शोषण करने का अधिकार रखता था और अपने से ऊपर वालों से शोषित होने का।

सामंतवाद का जन्म

- मध्यकालीन यूरोप की विशेष परिस्थितियों का सामना करने के लिए सामंतवाद का जन्म हुआ था |एक विशेष परिस्थिति थी -युग की अराजकता तथा अशांति |शार्लमा के मृत्यु के पश्चात पश्चिमी यूरोप में लगभग दो-तीन शताब्दियों तक घोर अराजक स्थिति बनी रही और केवल नाम मात्र को कानून और व्यवस्था रह गई थी। बर्बर जातियों के आक्रमण से यूरोप में केंद्रीय शासन व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी और राजाओं ने नाम मात्र को अपनी स्थिति को किसी तरह बनाए रखी।

सामंतवाद का जन्म

- उत्तर में नारमनों तथा डेनों के आक्रमण पूर्व में हंगेरियन तथा दक्षिण में मुसलमानों के आक्रमण से यूरोप के प्राय सभी महत्वपूर्ण राज्य टुकड़ों में बँट गए। शासन छोटी-छोटी ईकाइयों में विभक्त हो गयी ।प्रत्येक इकाई एक स्थानीय लार्ड या सामंत के अधीन होता था।लोगों का जीवन संकटों से ग्रस्त हो गया। उस समय एक ऐसी शक्ति तथा व्यवस्था की आवश्यकता थी जो आम लोगों के जानमाल की रक्षा करते हुए अराजकता तथा अव्यवस्थित स्थिति पर नियंत्रण कायम कर सके। इसी आवश्यकता ने यूरोप में सामंतवाद को जन्म दिया।
- कुछ वीर पुरुषों ने जो इकाइयों के स्वामी थे ग्रामों तथा नगरों के निवासियों की सुरक्षा करने और अराजकता का दमन करने का उत्तरदायित्व अपने सिर पर लिया।

सामंतवाद का जन्म

- उन्होंने ग्राम तथा नगरों में दुर्गों का निर्माण कर लिया और वहां कुछ सैनिक रखने लगे |सैनिकों की सहायता से वे आसपास के निवासियों की रक्षा करने का काम करने लगे| धीरे-धीरे आसपास की भूमि के स्वामी बनते गए |वहां के किसानों,श्रमिकों, व्यापारियों तथा अन्य वर्गों के लोगों ने भी उनकी अधीनता स्वीकार कर ली तथा भूमि और सुरक्षा के बदले उस वीर सामंत को उन लोगों ने कर देना स्वीकार कर लिया| इस तरह तत्कालीन समय तथा समाज की आवश्यकताओं के फलस्वरूप सामंतवाद का जन्म हुआ|

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

- पश्चिमी यूरोप के सामंती समाज में कुछ दिनों पश्चात एक अधिक्रम या क्रमवार संगठन की स्थापना हो गई ।इस अधिक्रम में प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक निश्चित स्थान था। सामंती संगठन का स्वरूप **पिरामिडनूमा** था जिसके शिखर पर ***राजा*** था। वह अनेक लार्डो को **जागीरें(Fiefs)**बांटता था। यह लार्ड ***ड्यूक*** तथा ***अर्ल*** कहलाते थे। ये लार्ड अपनी जागीरो में से कुछ भाग छोटे लार्ड में बांट देते थे।ये छोटे लार्ड ***बैरन*** कहलाते थे।

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

- ये बैरन इसके बदले में ड्यूक या अर्ल को सैनिक सहायता देते थे। इस प्रकार ड्यूक और अर्ल राजा के **सामंत(Vassals)** होते थे और उसे प्रत्यक्ष रूप में अपना अधिपति मानते थे।बैरन डयूकों या अर्लों को अपना अधिपति मानते थे। सामंतों के इस अधिक्रम में सबसे छोटी श्रेणी ***नाइटों* (Knights)**की थी । साधारणतया वे बैरन को अपना अधिपति मानते हैं और उनको अपनी सैनिक सेवा प्रदान करते थे। नाइटों के नीचे कोई सामंत नहीं थे। इस सामंती पिरामिड की सबसे निचली सीढ़ी पर काम करने वाले

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

- श्रमिक मुख्यत ***कृषक दास(Serf)*** थे। कृषक दास अपनी भूमि के साथ बंधे होते थे। यदि भूमि किसी एक भूमि पति के हाथ से दूसरे के हाथ में चली जाती थी तो एक कृषक दास भी उस भूमि के साथ ही दूसरे भूमि पति के हाथ में पहुंच जाते थे।
- इस प्रकार नाइट को छोड़कर प्रत्येक सामंत अपने से उच्च सामंत को अपना अधिपति मानता था और अपने से नीचे के सामंतो का अधिपति होता था। ऊपर से नीचे तक सारे संबंध निष्ठा पर आधारित थे।

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

- आवश्यकता के समय प्रत्येक अधिपति अपने सामंतों से सैन्य सहायता मांग सकता था। जैसे युद्ध के समय राजा ड्यूक और अर्ल से ,ड्यूक और अर्ल बैरनों से ,बैरन नाइटों से सैनिक सहायता लेते थे। प्रत्येक सामंत ,योद्धाओं की एक टुकड़ी अपने अधिपति को देता था ।इन सब से मिलकर राजा की सेना बनती थी ।यह सामंती अधिक्रम इतना शक्तिशाली था कि राजा भी किसी बैरन या नाइट को सीधे नहीं बुला सकता था।

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

और ना ही उससे सहायता मांग सकता था ।प्रत्येक कार्य में इस अधिक्रम की पूरी सावधानी से पालन किया जाता था।

- किसी अनुचर को 'फीफ' का हस्तांतरण बड़ी तड़क-भड़क के साथ एक नाटकीय समारोह द्वारा मनाया जाता था। अनुचर बनने वाला व्यक्ति लॉर्ड की गढ़ी में आता था जहां इस अवसर के लिए और भी लोग एकत्रित होते थे। लार्ड अपनी गढ़ी के बड़े कमरे में बैठता था और यह आदमी अस्त्र रहित होकर नंगे सिर लार्ड के सामने घुटनों के बल झुकता था।

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

- वह लार्ड का हाथ पकड़ता था और इस बात की शपथ लेता था कि वह लार्ड का आदमी बनकर रहेगा यह शपथ ***होमेज*** **(Homage)** कहलाती। लार्ड उस आदमी को उठाकर खड़ा करता था और शांति का चुंबन देता था। इसके बाद अनुचर बाइबल पर हाथ रखकर इस बात की शपथ लेता था कि वह अधिश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना करेगा ।यह ***स्वामिभक्ति की शपथ*** **(Fielty)** कहलाती थी। अंत में अधिश्वर उस आदमी को फीफ अर्थात भूमि प्रदान कर देता था।

सामंती वर्ग एवं निष्ठाएं

- अनुचर को औपचारिक रूप से फीफ प्रदान करने का यह कार्य ***इनवेस्टीचर (Investiture)*** कहलाता था जिसे भारतीय भाषा में अनुप्रतिष्ठापन कह सकते हैं। समारोह के इस भाग में उन्हें फीफ का स्वामित्व कागज पर लिखकर नहीं दिया जाता था अपितु भूमि का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई शाखा, मिट्टी का ढेला, दस्ताना, तलवार या कोई दूसरी वस्तु दी जाती थी।

सामंती वर्ग एंव निष्ठाएं

- इस तरह होमेज ,स्वामिभक्ति और विनियोग के पश्चात वह आदमी अधिपति का सामंत या अनुचर हो जाता था।

To be continued.....